आईएमएफ से भारत के वित्त मंत्रालय का सफर

यूपीए शासन में वित्त मंत्री के सलाहकार रहे पार्थसारथी शोम के इस पद पर आने की कहानी रोचक है। तब सिंगापुर में आईएमएफ के दूत (एंबैस्डर) के पद पर ढाई साल रहने के बाद वाशिंगटन स्थित आईएमएफ मुख्यालय लौटे उन्हें कुछ ही दिन हुए थे, जब उन्हें दिल्ली से एक फोन आया। यहाँ प्रस्तुत है शोम की आत्मकथा 'वर्चुस इन आईइस : आई डिड इट माई वे' (मुश्किलों में ही श्रेष्ठता : मैंने अपने तरीके से काम किया) का एक अंश, जिसमें इससे आगे की कहानी है।

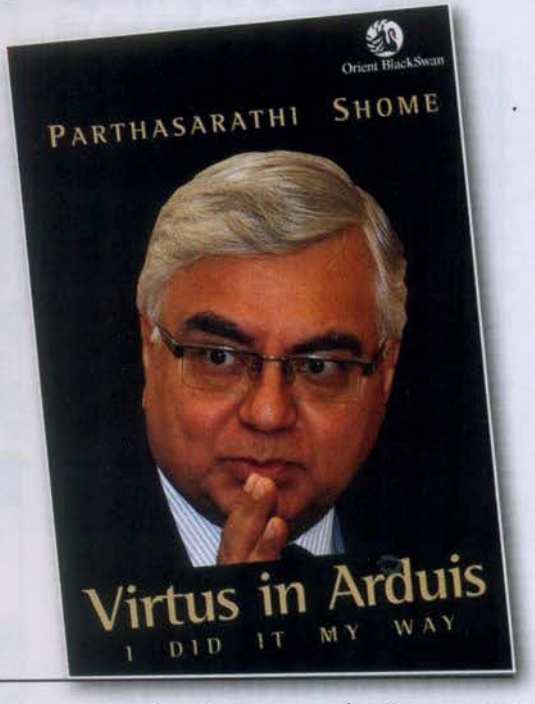

मैं वेनेजुएला से आये एक प्रतिनिधिमंडल के साथ एक मुश्किल बैठक की अध्यक्षता कर रहा था, उस देश में मेरी पहली यात्रा के करीब दो दशक बाद। मैं उन्हें समझा रहा था कि अर्थव्यवस्था की राजकोषीय (फिस्कल) चुनौतियों को देखते हुए उन्हें वित्त उपलब्ध कराने के किसी समझौते से पहले कर सुधारों पर अमल करना एक जरूरी शर्त होगी। यह एक ऐसा काम था, जिस पर कोई धन्यवाद नहीं मिलना था! इसलिए जब मेरी ब्लैकबेरी की घंटी बजने लगी तो स्पष्ट रूप से उस बैठक से निकल कर मुझे राहत महसूस हुई।

'क्या आप डॉ. पार्थसारथी शोम हैं?'

'जी हाँ। मैं किनसे बात कर रहा हूँ?'

'मैं पी. चिदंबरम हूँ।'

मैंने अपनी घड़ी देखी। यह 4.35 पीएम ईस्टर्न स्टैंडर्ड टाइम था, यानी भारत में सुबह 3.05 बजे का समय। पी. सी. आधी रात गये यह फोन कर रहे थे। मैंने खुद से कहा, जरूर कोई बड़ी महत्वपूर्ण बात होगी।

'हाँ, श्री चिदंबरम,' मैंने संयत स्वर में जवाब देने की कोशिश की, हालाँकि इस अनपेक्षित फोन के कारण का अनुमान लगाते हुए मेरी धड़कनें बढ़ गयी थीं।

'डॉ. शोम, मेरी पार्टी ने दो महीने पहले केंद्र में सरकार बनायी है। मुझे वित्त मंत्री नियुक्त किया गया है।'

'बधाई हो। मैं खबरों से परिचित हूँ।' मैंने थोड़ा अनिच्छुक स्वर में कहा।

उन्होंने बिना रुके बोलना जारी रखा, 'मेरे ऊपर भारी जिम्मेदारियाँ हैं। मुझे बहुत-से तकनीकी मुद्दों पर आपकी मदद की जरूरत है। मैं चाहता हूँ कि आप इन मसलों का प्रभार सँभालने के लिए मेरे सलाहकार के रूप में जुड़ें।'

मेरे विचारों में खलबली मच गयी थी। सिंगापुर में ढाई साल तक आईएमएफ के दूत की भूमिका निभाने और सिंगापुर की वित्तीय रूप से सावधान सत्ता के साथ वहाँ स्थित एशियाई अधिकारियों के लिए आईएमएफ के प्रशिक्षण संस्थान के खर्च में साझेदारी पर एक नये आशय-पत्र (एमओयू) को लेकर सफल बातचीत निपटाने और मॉनिटरी अथॉरिटी ऑफ सिंगापुर के भवन में काफी अतिरिक्त जगह हासिल करने के बाद मैं विजयी भाव में आईएमएफ मुख्यालय लौटा था। मैं सारा सामान समेट कर छह महीने पहले ही लौटा था और जैसा कि मेरे एक वरिष्ठ सहयोगी ने मुझे आईएमएफ मुख्यालय वापस बुलाये जाने का कारण समझाया था कि मुझे 'आग बुझाने' यानी आपात स्थितियों को सँभालने की जिम्मेदारी फिर से दी जा रही थी।

मैं हिचका। मेरी एक पल की चुप्पी पर तुरंत अगली प्रतिक्रिया आयी।

उन्होंने कहा, 'प्रधानमंत्री भी उत्सुक हैं कि आपको आना चाहिए। आप कब से काम शुरू कर सकते हैं?'

मैं उसी क्षण समझ गया कि पी.सी. के प्रति मेरी भूमिका का सुर जल्दी ही बदलने जा रहा है। मैंने भारतीय परिपाटी के अनुसार संबोधित करना शुरू कर दिया।

'सर, आपकी इच्छा क्या है, मैं कब से आऊँ?'

'15 दिनों में।'

मैं आसमान से गिर पड़ा। संभवतः उनका आशय यह था कि मैं आरंभिक चर्चा के लिए दिल्ली आऊँ।

मैं अभी-अभी सिंगापुर से लौटा था और वेनेजुएला के प्रतिनिधियों के साथ कर सुधारों पर बातचीत के मध्य में था। साथ ही मैं इटली जाने वाले एक तकनीकी सहायता मिशन की तैयारियाँ कर रहा था, जिसमें मुझे विशेषज्ञों के एक दल का नेतृत्व करना था। उन दिनों बहुत कम ही भारतीयों को, अगर कोई हो तो, पश्चिमी यूरोप जाने वाले किसी मिशन का नेतृत्व करने का अवसर मिलता था, खास कर तकनीकी सहायता के लिए।

मगर पी. सी. के साथ पहले भी साबका पड़ चुके होने के कारण मैं जान रहा था कि विपरीत विवरणों को गिनाने का कोई खास फायदा नहीं होने वाला है। फिर भी मैंने अपनी बात रखी, 'सर, अभी मैं पहले से चल रहे कुछ कामों के बीच में हूँ। मुझे उन्हें पूरा करना होगा।'

उनके उत्तर ने मुझे और हक्का-बक्का कर दिया। 'बेशक उनको पूरा करें। इसीलिए मैंने 15 दिनों बाद के लिए कहा।'

'मुझे अपने सामान वगैरह की पैकिंग और इस तरह के और काम भी करने होंगे।'

'आप अकेले रहते हैं। आप यह सब बहुत जल्दी कर लेंगे।' इस बिंदु पर दुर्लभ ढंग से निजी स्तर पर छूते हुए उनकी आवाज थोड़ी नरम लगी। हालाँकि अकेले व्यक्तियों के लिए इस सामान्य धारणा ने मुझे बीते दशकों में कई बार मुश्किल में डाला था। पी. सी. वही धारणा बना रहे थे, वही गलती कर रहे थे, बस इससे मेरा संतुलन बहुत नहीं डगमगाया क्योंकि मैं इस बिल्कुल ही न माने जा सकने वाले सामाजिक नियम से त्रस्त था।

'सर, मुझे यहाँ से चलने से पहले आईएमएफ में बहुत सारे कदमों का पालन करना होगा।'

'ठीक है, उनसे बात कर लें और मुझे एक-दो दिनों में बता दें।' ■